Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र | जनवरी 2020 (द्वितीय)

26 जनवरी 2020

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

Email : aryapsharyana@yahoo.in | कृण्वन्तो विश्वमार्यम् | Visit us : www.apsharyana.org

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120
विक्रम संवत् 2076
दयानन्दाब्द 196

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख्य-पत्रिका

वर्ष 15 अंक 22

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जनवरी, 2020 (द्वितीय)
16 से 30 जनवरी, 2020 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय– स्वामी श्रद्धानन्द–एक विलक्षण व्यक्तित्व 2
2. जिज्ञासा-विमर्श (साधना/मोक्ष) 4
3. 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' के उद्घोषक नेता श्री सुभाषचन्द्र बोस के 123वें जन्म दिवस पर उनके कुछ संस्करण 6
4. वीर हकीकतराय बलिदान दिवस–कविता 7
5. तप और त्याग की प्रतिमूर्ति–आचार्य बलदेव जी महाराज 8
6. हमें ईश्वर को जगत् में उसकी चेष्टाओं व क्रियाओं के द्वारा देखना चाहिए 9
7. हकीकतराय की धर्मरक्षा 11
8. महापर्व गणतन्त्र का सन्देश 12
9. हमें ऋत सत्य के प्रति आत्मसमर्पण करना चाहिए 13
10. समाचार-प्रभाग 15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

–सम्पादक

सम्पादकीय... स्वामी श्रद्धानन्द—एक विलक्षण व्यक्तित्व

❑ उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

गतांक से आगे....

गोरखों की संगीनें-रॉलेट एक्ट के विरोध में स्वामी जी ने दिल्ली की हड़ताल का आयोजन किया। दिल्ली आते

समय मार्ग में गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया तो दिल्ली वासियों में उत्तेजना फैल गई और वे स्वामी जी के नेतृत्व में पीपल पार्क में गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए एकत्रित हो गए। राज्य अधिकारियों ने इस विरोध सभा को भंग करने का आदेश दिया। स्वामी जी एक बड़ी भीड़ के साथ 30.03.1919 को वहाँ से चले और जब घण्टाघर के पास पहुँचे तो फौजियों ने उस भीड़ को आगे बढ़ने से रोक दिया। एक सुरक्षा जवान ने भीड़ पर गोली चलाने की धमकी देकर राइफल उठाई। इस पर स्वामी जी आगे बढ़े और उस जवान और भीड़ के बीच में खड़े हो गए। उन्होंने अपनी छाती खोलकर उस जवान को ललकार कर कहा–'मुझ पर गोली चलाओ।' कहकर स्वामी जी अकेले ही आगे बढ़ गए और जवानों से कहा कि तुम निर्दोष प्रजा पर क्यों गोली चला रहे हो। यह कहते ही दो संगीनें उनकी छाती की ओर तन गईं। उन्होंने बड़ी अशिष्टता से कहा–'हम तुम्हें बींध देंगे।' स्वामी जी ने बड़े शान्त स्वभाव से कहा, 'मैं खड़ा हूँ, गोली चलाओ।' एकदम आठ संगीनें उनकी छाती के सामने आ गई। उसी समय तुरन्त जवानों को कमाण्डर का आदेश मिला और संगीनें हटा ली गईं। उस समय पूर्ण शान्ति व्याप्त थी। इसके बाद स्वामी जी के आदेश से भीड़ शान्तिपूर्वक तितर-बितर हो गई।

जामा मस्जिद पर भाषण–उत्तेजना के उस काल में जब हिन्दू और मुसलमानों का रक्त दिल्ली की सड़कों पर बह रहा था, इस वीर संन्यासी ने महजब व जानमाल का विचार किए बगैर दिल्ली के नागरिकों की सेवा की थी। 4 अप्रैल 1919 के दिन मुसलमानों ने उन्होंने बड़ा भाई कहकर और नेता मानकर उन्हें भारत की सबसे बड़ी और विख्यात मस्जिद जामा मस्जिद दिल्ली की मिम्बर पर बिठाकर उनका अभूतपूर्व सम्मान किया था। संसार के इतिहास में यह पहला अवसर था जब एक गैरमुस्लिम को मस्जिद की वेदी से उपदेश देने की अनुमति दी गई थी। उन्होंने उस वेदी से **'त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ, अधा ते सुम्नमीमहे।'** वेदमन्त्र के द्वारा ईश्वर के माता और पिता रूप का वर्णन किया और 'ओ३म् शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!' के साथ अपना उपदेश समाप्त किया।

अमृतसर कांग्रेस-8 जून 1919 को इलाहाबाद में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक हुई। इसमें कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में होना निश्चित हुआ। उसका सम्पूर्ण दायित्व भी स्वामी जी पर पड़ा। यह वह समय था जब अक्षत-विक्षत पंजाब अत्याचारों की दारुण वेदना से कराह रहा था। जब जलियावाला बाग में सैकड़ों युवा गोलियों से भून दिए गए थे, माताओं की गोद सूनी हो गई थी, पत्नियों के मांग की सिंदूर पुंछ गए थे। जिस समय अमृतसर फौजी शासन लगा हुआ था उस समय अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन करना आग के समान खेलने के समान था। स्वामी जी इसके स्वागताध्यक्ष मनोनीत हुए। परन्तु स्वामी जी ने इसका सुप्रबन्ध करके और इसे सफल बनाकर धैर्य, साहस, निर्भीकता की बेजोड़ मिशाल कायम की थी। स्वागताध्यक्ष के नाते स्वामी जी ने कांग्रेस की उस समय की परम्परा के विरुद्ध स्वागत भाषण हिन्दी में ही लिखा और पढ़ा।

अमृतसर कांग्रेस की सफलता और हिन्दी भाषण इतिहास में चिरस्मरणीय घटना है। स्वामी जी ने अपने भाषण में देशवासियों से यह मार्मिक अपील की, "यदि जाति को स्वतन्त्र देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्ति बनकर अपनी संतान के सदाचार की बुनियाद रख दो। जब सदाचारी, ब्रह्मचारी और शिक्षक हों और राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति हो, तभी राष्ट्र की जरूरतों को पूरा करने वाले नौजवान निकलेंगे। नहीं तो इस प्रकार आपकी सन्तान विदेशी विचारों और विदेशी सभ्यता की गुलाम बन जायेगी।" स्वागताध्यक्ष के रूप में श्रद्धानन्द जी का भाषण उच्चता, पवित्रता, गंभीरता और सच्चाई का नमूना था। वक्ता के व्यक्तित्व की छाप उसमें आदि से अन्त तक बनी हुई थी। मनुष्य मात्र के प्रति उसमें सद्भावना प्रकट की गई थी।

गुरु का बाग आन्दोलन-10 मई 1922 में गुरु का बाग आन्दोलन में भाग लेने के लिए स्वामी जी अमृतसर पहुँचे। दिल्ली की शाही जामा मस्जिद के मिम्बर की शोभा बढ़ाने वाले आर्यसंन्यासी ने अमृतसर के अकाल तख्त की भी शोभा बढ़ाई। वहाँ के दीवान ने उन्हें दिल्ली निवासियों की ओर से

यह संदेश सुनाया-"शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी का इशारा पाते ही दिल्ली से 100 आदमी आने को तैयार हैं। पांच हजार रुपये की सहायता भी दिल्ली देगा। दोपहर के एक बजे वे गुरु का बाग भी गए। सायं साढ़े पांच बजे अमृतसर से लौटने की तैयारी में थे कि उनको गिरफ्तार कर लिया गया और अमृतसर जेल में बन्द कर दिया गया। 5 अक्तूबर तक मुकदमा चला और एक वर्ष चार मास की कैद की सजा दी गई। उनको मियांवाली जेल में भेज दिया गया।"

शुद्धि आन्दोलन-स्वामी जी ने शुद्धि के काम के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता दे रहे थे। आप और आर्यपथिक पण्डित लेखराम द्वारा सन् 1896 में लाहौर और जालंधर की आर्यसमाजों में सैकड़ों रहतियों की शुद्धि की गई थी। कुछ दिन मेघों, ओड़ो, पहाड़ी प्रदेश के डूमनों की शुद्धि की भी धूम रही। स्वामी जी का अनुमान था कि शुद्धि आन्दोलन की शुरुआत होने से पूर्व पंजाब में ही लगभग एक लाख व्यक्ति आर्यसमाज द्वारा शुद्ध होकर अपनी बिरादरी या आर्यसमाज में शामिल हुए होंगे। देश में शुद्धि आन्दोलन का विधिवत् आरम्भ 13 फरवरी 1923 को आगरा में हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना के साथ ही हुआ था। इस सभा के प्रथम प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द ही चुने गए। सर्वप्रथम उन्होंने मलकाने राजपूतों को स्वधर्म में वापिस लेकर इस महान् कार्य का शुभारम्भ किया। एक-एक दिन में डेढ़-डेढ़, दो-दो हजार मलकाने शुद्ध किए गए। हजारों की संख्या में मुल्ले जाट मुसलमानों को शुद्ध करके पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया, जिन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था। इसके साथ ही अन्य अनेक मुसलमानों को भी उनकी इच्छा से शुद्ध करके वैदिक धर्म में प्रविष्ट कराया गया।

स्वामी जी का बलिदान-शुद्धि आन्दोलन जोरों पर था। करांची से असगरी बेगम नाम की एक महिला अपने दो बच्चों और भतीजे के साथ दिल्ली आर्यसमाज में आई और उसने हिन्दू धर्म स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की। उसकी इच्छानुसार उसका संस्कार किया गया और उसका नाम शान्ति देवी रखा गया। शान्ति देवी में स्थानीय वनिता आश्रम में रहते हुए हिन्दी व संस्कृत पढ़ना आरम्भ कर दिया। लगभग तीन महीने के बाद उसके पिता व पति ढूंढ़ते हुए दिल्ली आए और शान्ति से मिलकर पुनः इस्लाम धर्म स्वीकार करने का आग्रह किया, पर शान्ति देवी अडिग रही। परिणाम स्वरूप उसके पति अब्दुल हलाल ने शान्ति देवी, स्वामी श्रद्धानन्द, प्रोफेसर इन्द्र आदि पर मुकदमा दायर कर दिया। लगभग छह महीने मुकदमा चला। अन्ततः सभी अभियुक्त बरी कर दिये गए। मुसलमानों में असन्तोष की आग भड़क उठी। स्वामी जी के नाम धमकी भरे गुमनाम पत्र आने लगे। हापुड़, मेरठ, दिल्ली आदि में भी परचे बांटे गए पर स्वामी जी ने इसकी कोई परवाह नहीं की। इसी बीच स्वामी जी अस्वस्थ हो गए। जीवन के प्रति निराशा होने लगी। पुत्र इन्द्र को बुलाकर कहा, "इस शरीर का कुछ ठिकाना नहीं, तुम एक काम जरूर करना, मेरे कमरे में आर्यसमाज के इतिहास की सामग्री पड़ी है, उसे संभाल लेना और समय निकालकर इतिहास अवश्य लिखना।" डॉ० सुखदेव जी ने हँसकर कहा, "स्वामी जी अब आप अच्छे हो रहे हो। दो दिन में आपको रोटी दे दूँगा और आप बैठने लगेंगे।" स्वामी जी ने उत्तर दिया, "आप लोग तो ऐसे ही कहते हैं, पर मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मेरा यह शरीर सेवा के योग्य नहीं रहा। इस रोगी देह से देश का क्या कल्याण होगा? अब तो एक ही इच्छा है कि दूसरे जन्म में नई देह से इस जीवन का काम पूरा करूँ।"

यह सब पढ़-सुनकर लगता है कि सम्भवतः स्वामी जी को अपने अवसान का पूर्वाभ्यास हो गया था। 23 दिसम्बर 1926 का दिन था, निवृत्त होकर आराम से बैठे थे। सीढ़ियों पर एक युवक आता देख सेवक धर्मसिंह ने रोकने का प्रयास किया। स्वामी जी ने आने का आदेश दिया। युवक ने आकर इस्लाम के सम्बन्ध में कुछ चर्चा करने की इच्छा प्रकट की। स्वामी जी ने स्वस्थ होने पर बातचीत करने का आश्वासन दिया। युवक ने पानी मांगा, सेवक धर्मसिंह पानी लेने चला गया। तत्काल हत्यारे ने मौका पाकर संन्यासी की छाती पर पिस्तौल की गोलियों से वार कर दिया। स्वामी जी के मुख से ओ३म् की ध्वनि ही निकल पाई थी कि वे पंचतत्त्व में विलीन हो गए। सेवक धर्मसिंह ने हत्यारे को पकड़ने का प्रयास किया तो उसे भी गोली मारकर घायल कर दिया। पंडित धर्मपाल विद्यालंकार ने झपटकर हत्यारे को दबोच लिया और तब तक दबोचे रखा जब तक पुलिस नहीं आई। यह युवक था अब्दुल रसीद।

स्वामी जी की शवयात्रा दिल्ली में अभूतपूर्व निकली। श्मशान भूमि में लाखों लोगों की शोकग्रस्त आँखों से आँसू निकल रहे थे। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने उस समय जो शब्द कहे थे, वे सदा स्मरणीय रहेंगे-"**स्वामी जी की हड्डियों से यमुना तट पर एक ऐसा वृक्ष उत्पन्न होगा जिसकी जड़ें पाताल तक पहुँचेंगी। शहीदों के रक्त से सदा नए शहीद पैदा होते हैं।**"

जिज्ञासा-विमर्श (साधना/मोक्ष)

❑ आचार्य सोमदेव, मलार्ना चौड़, सवाईमाधोपुर (राज०)

गतांक से आगे...

हाँ, यह अवश्य है कि ये इनके बुरे कर्मों का फल है जो इनको ऐसी अवस्था प्राप्त हुई है। इस अवस्था में भी

इनके ऊपर परमेश्वर की पूरी दया है कि इनको मनुष्य शरीर मिला है। ये इस शरीर को पाकर अधिक श्रेष्ठ कर्म कर, ज्ञान को प्राप्त कर, इससे श्रेष्ठ शरीर को प्राप्त कर सकते हैं। वैदिक मान्यता अनुसार इनकी उपयोगिता जैसी ऊपर कही गई है, वैसी हो सकती है। यदि इनके विषय में ध्यान दिया जाये तो प्रकृति के लिए जैसे अन्य शरीरधारियों की उपयोगिता है, वैसी इनकी भी उपयोगिता है। इतिहास ग्रन्थों से भी इनके विषय में ज्ञात होता है कि ये भी युद्धादि और राजकार्यों में भाग लेते थे। ऐसा पहले था तो अब क्यों नहीं हो सकता?

सृष्टि विषय

जिज्ञासा-1 (क) 'परोपकारी' अंक मार्च (द्वितीय) 2011 ई० में, पृ० 25 पर उल्लेखित श्री नन्दकिशोर एवं श्री उदयवीर सिंह की जिज्ञासाएँ, समाधान करते समय आपने अमैथुनी सृष्टि/उत्पत्ति बताते हुए केवल ईश्वरीय सर्वशक्तिमत्ता पर पूर्णत: आस्था बतायी है। आपने स्पष्टत: इन अनुमानों को अलग क्यों कर दिया, जो कुरान व बाइबिल में इनके हैं?

(ख) पौराणिक कथनों पर अविश्वास करने के सब वेद प्रमाणों सहित बताएँ कि सर्वप्रथम कौन पुरुष व महिला सृष्टि उत्पत्ति के समय हुए? कैसे, कहाँ, कौन-कौन (कितने-कितने) आये? ऐसा वर्णन वेदों में क्या कहीं भी नहीं है? सम्भावना आकाश से आने की क्षीण प्राय: क्यों है?

-रमेश बंसल, 111/6, बीसलपुर प्रोजेक्ट कॉलोनी, टोंक रोड, देवली-304804 (राज०)

समाधान-(क) अमैथुनी सृष्टि निश्चित रूप से ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता पर ही आधारित है। इसके अतिरिक्त कोई अन्य सम्भावना नहीं दिख रही। आप कुरान व बाइबिल की बातों को भी पुष्ट करवाना चाहते हैं। आपकी बात से ऐसा प्रतीत होता है कि आपको कुरान व बाइबिल के विषय में ठीक से ज्ञात नहीं है, यदि होता तो ऐसा न कहते। देखिए, कुरान व बाइबिल भी सृष्टि उत्पत्ति करने में ईश्वर को ही सर्वोपरि मानते हैं, किन्तु कुरान व बाइबिल में जो सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन है, वह युक्ति, तर्क व वेदविरुद्ध होने से अमान्य है। कुरान, बाइबिल, तौरेत आदि ग्रन्थों में एक जैसी मान्यता है कि इस धरती पर मानवोत्पत्ति आदम और उसकी पत्नी हव्वा के रूप में हुई थी। तौरेत उ.प. 2 आ. 7-9 में आदम को धूल से उत्पन्न हुआ लिखा है और तौ.उ.प. 2/आ.21,22 में हव्वा की उत्पत्ति आदम की एक पसली से हुई। इन दोनों से आगे मानव सृष्टि चली, ऐसी कुरान, बाइबिल की मान्यता है। इनकी ये बातें विचारणीय हैं। इनके अनुसार तो सृष्टि का प्रारम्भ ही अनाचार से हुआ, क्योंकि एक आदम और हव्वा से जो लड़के-लड़कियाँ हुईं, उन्होंने आगे चलकर आपस में संयुक्त हो संतान उत्पन्न की, ये अनाचार हुआ, क्योंकि भाई-बहिन का संयुक्त होना अनाचार ही है। इसलिए जो वैदिक रीति है कि ईश्वरीय सर्वशक्तिमत्ता से अमैथुनी सृष्टि में सहस्रों नर-नारी उत्पन्न हुए और उनसे मानव सृष्टि चली। आज भी इस पृथिवी पर मनुष्यों में भिन्न-भिन्न प्रजातियाँ मिल रही हैं, उससे भी ज्ञात होता है कि इनकी आदि उत्पत्ति एक जोड़े से न होकर अनेक जोड़ों से हुई, इसको आज का विज्ञान भी स्वीकार करता है।

हव्वा की उत्पत्ति वाली बात भी मात्र कल्पना है कि उसको आदम की एक पसली से बनाया। हव्वा को आदम की एक पसली से बनाने की क्या आवश्यकता थी, जैसे आदम को बनाया वैसे इसको भी बना देता, क्योंकि ईश्वर तो सर्वशक्तिमान् है और **यदि एक पसली से बनाया ही था तो आज सभी स्त्रियाँ एक पसली वाली क्यों नहीं?** ऐसी-ऐसी कुरान व बाइबिल की बातें मात्र कल्पना ही है, इसलिए इनके अनुमानों को पृथक् कर ईश्वरीय सर्वशक्तिमत्ता पर पूर्णत: आस्था दिखाई है।

और भी स्वामी विद्यानन्द जी के सत्यार्थ भास्कर से लिखते हैं-''पुरुष के वीर्य का स्त्री के गर्भाशय में रज के साथ ठहर जाने से गर्भ उत्पन्न होता है, यदि कोई पदार्थ

वेत्ता उन तत्त्वों को पूरी तरह जान ले, जो वीर्य में हैं तो वह स्वतन्त्र रूप से वीर्य बना सकता है। उस अवस्था में पुरुष के वीर्य की आवश्यकता न रहेगी। ....परन्तु कोई भी मनुष्य पूर्ण ज्ञानी न होने से ऐसा नहीं कर सकता। हाँ, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक तथा सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के लिए यह कोई कठिन कार्य नहीं है।'' यह मान्यता युक्तियुक्त है। सर्वशक्तिमान् ईश्वर ने आदि सृष्टि में पृथिवी के गर्भ में प्राणियों की संरचना कर उत्पन्न किया।

(ख) पौराणिक कथनों पर अविश्वास इसलिए कि इनके सृष्टि उत्पत्ति विषयक परस्पर विरोधी कथन मिथ्या प्रलाप के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। इनके मिथ्या प्रलापों का कुछ दिग्दर्शन कराते हैं-शिवपुराण में सृष्टि रचना विषय में लिखा है-शिव ने एक जलाशय बनाया, जलाशय में से एक कमल उत्पन्न हुआ, उस कमल में से ब्रह्मा उत्पन्न हुए। ब्रह्मा ने जल में अंजलि भरकर पटकी तो उससे एक बुदबुदा उठा, उससे एक पुरुष (विष्णु) उत्पन्न हुआ। इस पुरुष ने ब्रह्मा से कहा कि हे पुत्र! सृष्टि उत्पन्न कर। इस पर ब्रह्मा ने कहा कि मैं तेरा पुत्र नहीं, तू मेरा पुत्र है। दोनों एक-दूसरे को पुत्र कहने लगे तो इसी बात पर युद्ध छिड़ गया। ....महादेव ने जैसे-तैसे युद्ध बन्द करवाया और अपनी जटाओं में से भस्म का एक गोला निकालकर दिया और कहा कि इसमें से सृष्टि बनाओ। दोनों ने राख का गोला लिया और सृष्टि रच दी। अस्तु, यह कपोल कल्पना शिवपुराण में लिखी है, भला इसको कौन बुद्धिमान् मनुष्य मानेगा कि राख से मनुष्य आदि सृष्टि उत्पन्न होती है। **यदि राख से सृष्टि उत्पन्न होती है तो महादेव का शरीर किससे बना? महादेव ने जलाशय किससे उत्पन्न किया? जल के आधार को कैसे बनाया आदि-आदि** अनेक प्रश्न उत्पन्न होंगे, जिनके उत्तर इन पुराणवादियों के पास नहीं हैं।

अब भागवत पुराण की पोपलीला देखिये, कैसी विचित्र है! भागवत पुराण के तृतीय स्कन्द में सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन है, उसमें लिखा है कि विष्णु की नाभि से कमल, कमल से ब्रह्मा, उस ब्रह्मा के दाहिने पग के अंगूठे से स्वायम्भुव और बायें अंगूठे से शतरूपा रानी उत्पन्न हुई। ब्रह्मा के ललाट से रुद्र और मरीचि आदि दश पुत्र, उनसे दक्ष प्रजापति की उत्पत्ति हुई। दक्ष की तेरह लड़कियों का विवाह कश्यप से हुआ। उनमें से दिति से दैत्य, दनु से दानव, वनिता से पक्षी, कद्रू से सर्प, सरमा से कुत्ते, स्याल आदि उत्पन्न हुए और अन्य स्त्रियों से हाथी, घोड़े, ऊँट, गधा, भैंसा, घास-फूस, वृक्षादि उत्पन्न हुए।

इन सब बातों से ज्ञात होता है कि पुराणों में सृष्टि उत्पत्ति विषयक कथन बिना सोचे-विचारे ही लिखा गया है। कोई भी विचारशील व्यक्ति इन बातों को स्वीकार नहीं कर सकता कि स्त्रियों से हाथी, घोड़े, गधे, वृक्षादि उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के कथन बुद्धि के दिवालियेपन का लक्षण है, इसलिए पुराणों के कथन सर्वथा अविश्वास करने योग्य हैं और इस विषय में वेद और ऋषियों के कथन सर्वथा विश्वास के योग्य हैं।

सृष्टि उत्पत्ति विषयक मन्त्र वेद में अनेक हैं, जो विज्ञान को मान्य हैं। इसके लिए मुख्यरूप से ऋग्वेद का नासदीय सूक्त और यजुर्वेद का 31वाँ पुरुषाध्याय द्रष्टव्य हैं। विस्तारभय से उन मन्त्रों को हम यहाँ नहीं लिख रहे हैं।

सर्वप्रथम कौन स्त्री-पुरुष उत्पन्न हुए-इसको बताने में हम असमर्थ हैं, इसका पता न लग पाया। किसी को ज्ञात हो तो अवश्य अवगत करायें। वैसे भी हम अपने ही दस-पन्द्रह पीढ़ी पूर्व के लोगों का नाम आदि नहीं जान पाते (जिनका सत्य इतिहास मिलता है, उनको छोड़कर) तो लगभग 196 करोड़ वर्ष पूर्व के लोगों का नाम आदि कैसे जानेंगे? आपने पूछा है उत्पन्न कैसे हुए? इसका उत्तर जिज्ञासा-समाधान-1 में दिया जा चुका है। आप जानना चाहते हैं कि कहाँ उत्पन्न हुए? तो इसका उत्तर महर्षि दयानन्द के अनुसार त्रिविष्टिप=तिब्बत क्षेत्र में उत्पन्न हुए, क्योंकि यही क्षेत्र सबसे ऊँचा और मानवोत्पत्ति के सर्वथा अनुकूल था।

आज भी अनेक पाश्चात्य व भारतीय विद्वान् मानवोत्पत्ति का स्थान हिमालय को ही मानते हैं। कितने आये इसका उत्तर दे चुके कि युक्ति से ज्ञात होता है कि अनेक आये (उत्पन्न हुए)। इनके आकाश से आने की सम्भावना क्षीण प्रायः इसलिए है, क्योंकि इस पृथिवी पर रहने वाले शरीरों का उपादान कारण पृथिवी तत्त्व है, इसलिए यहाँ के शरीर पार्थिव हैं। पार्थिव होने के कारण सृष्टि के आरम्भ में इनका पृथिवी से उत्पन्न होना युक्तियुक्त है।

क्रमशः अगले अंक में...

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' के उद्घोषक नेता श्री सुभाषचन्द्र बोस के 123वें (23.01.1897) जन्मदिवस पर उनके कुछ संस्करण

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

कमला ने पुकार कर कहा, ''कम से कम आंटी (अर्थात् माता प्रभावती) से तो मिल लो...। तुमने खाना भी नहीं खाया

होगा।'' ''चिन्ता न करो कमला, इस समय मुझे भूख प्यास कुछ भी नहीं है।'' कहते हुए सुभाष आँखों से ओझल हो गये और कमला ठगी-सी खड़ी रह गई।

कई मास रोगियों की सेवा करने के पश्चात् घर लौटे और पिताजी के चरणों में अत्यन्त विनम्र भाव से प्रणाम करते हुए कहा, ''क्षमा कीजिये, पिता जी मैं आपकी आज्ञा लिये बिना जाजपुर चला गया था।'' रायबहादुर जानकीदास ने गम्भीर स्वर में कहा, ''अब तो क्षमा का प्रश्न ही नहीं उठता, वैसे तुमने जो किया है वह सर्वथा मेरी प्रतिष्ठा के विरुद्ध है। तुम्हारा भविष्य अन्धकारमय है।'' सुभाष ने कहा, ''पिताजी! सेवा कार्य निन्दनीय तो नहीं होता।'' इसी बीच माता प्रभावती आ गई। सुभाष ने माँ के चरण स्पर्श किये। रायबहादुर ने कहा, ''तुम्हारी यही अन्धी ममता इसके ऊलजलूल कार्यों को प्रोत्साहन देती है।''

''तू कीर्तिमान हो मेरे लाल!'' माँ का गद्गद् कण्ठ स्वर प्रस्फुटित हुआ, ''तेरी उच्च भाव अभिव्यक्ति ने मेरे ममता के अन्धकार को नष्ट कर दिया और बुद्धि का पट स्वच्छ हो गया है। वास्तव में मेरी कोख धन्य है जिसका बेटा मानव मात्र की व्यथा को दूर करने के लिए जन्मा हो। मुझे आज पूर्ण विश्वास हो गया है कि तेरा जन्म अपने लिए नहीं दूसरों की पीड़ा मुक्ति के लिए हुआ है। मेरी कोटि-कोटि शुभकामनाएँ और आशीष तेरे साथ रहेंगे। ईश्वर तेरे अनुष्ठान में कीर्ति और सफलता प्रदान करे।''

इधर माँ के आंखों से पुत्र के मिलन से अश्रु बरस रहे थे और उधर माँ के आँचल को पाकर सुभाष के आंखों से अश्रु बह रहे थे। इसी भावना में बहते हुए सुभाष ने कहा, मैं बड़ा भाग्यशाली हूँ तेरी कोख से जन्म लेकर मैं स्वयं धन्य-धन्य हूँ, माँ! इस प्रकार माँ-पुत्र का मिलन हर्ष अतिरेक में व्यतीत हो रहा था।

आई सी एस की परीक्षा एवं सुभाष का निर्णय- राजबहादुर जानकीनाथ सुभाष के कार्यों एवं व्यवहार से असन्तुष्ट दिखाई दे रहे थे। एक दिन सुभाष की माता श्रीमती प्रभावती ने अपने पति की स्थिति को देखकर कहा, ''मैं पिछले कुछ समय से ऐसा आभास कर रही हूँ कि आप मानसिक रूप से अशान्त हैं, इसका प्रभाव आपके स्वास्थ्य और व्यवहार पर पड़ रहा है।'' रायबहादुर जानकीनाथ ने कहा, ''आप व्यर्थ में सुभाष के विषय में चिन्तित रहते हैं, वह एक महापुरुष है जो जन्म के साथ अद्भुत प्रतिभा लेकर आया है।'' जानकीनाथ ने कहा, ''प्रत्येक माँ अपने पुत्र के लिए ममतावश ऐसे ही विचार रखती है, परन्तु वह अत्यन्त हठी एवं दुस्साहसी है। यदि तुम यह चाहती हो कि मेरा मन शान्त हो जाये तुम इसे तैयार करो कि वह आई सी एस की परीक्षा हेतु लन्दन जाये।''

माता प्रभावती अपने पति की जिद और अपने पुत्र की दृढ़ प्रतिज्ञा से परिचित थी और बैचेन रहने लगी। एक दिन माँ को दु:खी देखकर सुभाष ने कहा, ''क्या बात है माँ? तुम स्वस्थ नहीं लगती'' प्रभावती ने कहा, ''सुभाष तुम ठीक कहते हो। तुम्हारे पिता ने तुम्हें आई.सी.एस. की प्रतियोगिता में बैठने के लिए विलायत भेजने का निर्णय किया है।'' यह घोषणा सुभाष के लिए बिच्छु के डंक के समान थी। सुभाष ने कहा, ''पिताजी जी चाहते हैं कि मैं ब्रिटिश सरकार के अधीन उच्च अधिकारी बनकर अपने वास्तविक उद्देश्य से विमुख हो जाऊँ। माँ, मेरा जन्म एक विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए हुआ है जो ब्रिटिश साम्राज्य की जी हजूरी करने से निष्फल हो जायेगा।''

पिताजी के इस निर्णय से सहमत न होता हुआ भी आई.सी.एस. की प्रतियोगिता में सम्मिलित होने के लिए सुभाष लन्दन के लिए प्रस्थान कर गया। वहाँ प्रतियोगिता की तैयारी को भी करता रहा, परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ने के लिए भी योजनायें बनाता रहा। प्रतिभाशाली सुभाष ने १९२० में आई.सी.एस. की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया। माता-पिता, बन्धु-बान्धव इस सफलता पर फूले नहीं समाये किन्तु सुभाष का लक्ष्य आक्रान्ता अंग्रेजों की पराधीनता करना नहीं था, वे तो भारत को स्वतन्त्र कराना चाहते थे। उस समय आई.सी.एस. अधिकारी एक राजा के समान होते थे। सुभाष चाहते तो जीवन भर शाही ठाठ-बाट से जीवन जी सकते थे,

किन्तु उन्होंने आई.सी.एस. से त्यागपत्र देकर सारे ठाठ-बाट को ठुकरा दिया। उस क्षण स्तब्ध रह गये, जब सुभाष की यह घोषणा प्रकाशित हुई, जिसके अन्तर्गत उन्होंने भारत के तत्कालीन ब्रिटिश राज्य सचिव लार्ड लिटन को सम्बोधित करते हुए लिखा था-

''मैं एक विदेशी सत्ता के अधीन कार्य नहीं कर सकता। मेरे विचार से जो व्यक्ति देश-सेवा का संकल्प रखता हो, वह ब्रिटिश राज्य के प्रति वफादार नहीं रह सकता है। मैंने अपने हृदय और आत्मा की सम्पूर्ण निष्ठा के साथ भारत की सेवा करने का संकल्प किया है अत: मुझसे ब्रिटिश सरकार के अधीन अफसरशाही का निर्वाह नहीं हो सकेगा।''

सुभाष के पद त्यागने की अभूतपूर्व घोषणा ने पिता की सारी आशाओं पर तुषारापात कर दिया। उन्होंने तार द्वारा सुभाष के पद त्याग का कारण पूछा जिसके उत्तर में सुभाष ने स्थिति स्पष्ट की, ''इंग्लैण्ड के सम्राट के प्रति निष्ठावान् होने की शपथ ग्रहण करना मेरे लिए असम्भव था। वह प्रतिज्ञा ऐसे भद्दे ढंग से प्रारम्भ हो रही थी, जिसे मेरे हृदय ने स्वीकार नहीं किया।''

अगली जीवन यात्रा- आप कई बार जेल गये, कई बार छूटे। जेल से छूटकर कांग्रेस के साथ मिलकर कार्य करने लगे। आप अनेक सम्मेलनों के अधिकारी व संयोजक बने। एक बार ''नौजवान भारत सभा'' के अधिवेशन में सभापति चुने गये। आपके भाषण की आड़ लेकर बिना मुकद्मा चलाये आप को जेल में डाल दिया। त्रिपुरा कांग्रेस के सभापति चुने गये एक बार पुलिस दल की आँखों में धूल डालकर पठान के वेश में काबुल से होते हुए जर्मनी पहुँचे। हिटलर से मिले। सहायता का आश्वासन पाकर जापान पहुँच गये वहां आजाद हिन्द फौज की स्थापना की। आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की। २३ अक्टूबर १९४३ को इस अन्तरिम सरकार के मन्त्री मण्डल की बैठक में ब्रिटेन और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का निर्णय किया। यह निर्णय स्वयं सुभाष जी के भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए आजाद हिन्द फौज के प्रयास के साथ लागू हो गया। नेता जी ने सैनिकों का आह्वान किया-

''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

अन्तत: १९४७ में भारत विभाजन के साथ देश स्वतन्त्र तो हो गया, परन्तु उसका एक भाग कटकर पश्चिमी एवं पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगला देश) अलग हो गया। सुभाष चन्द्र बोस की सुलगायी आग ने परतन्त्रता को भस्म कर डाला और भारत भारतवासियों का हो गया, पर नेता जी का अता-पता न था।

सुभाष की मृत्यु का रहस्य- सुभाष बोस के सम्बन्ध में अफवाहों का बाजार गर्म था। कभी उनको रुस में बताया जाता कभी यह कहा जाता कि वे साधु के वेश में विचरण कर रहे हैं। नेता जी का जीवन रहस्य ही बना चलता रहा। बहुत वर्षों तक लोगों को यह विश्वास रहा कि यकायक नेता जी अवश्य प्रकट होंगे। एक दिन वे आयेगें और भारत का सारा मानचित्र बदल जायेगा।

अब इतना समय बीत गया है कि नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का कहीं जीवित रहना असम्भव है। फिर भी भारत का इतिहास जब भी निष्पक्ष ढंग से लिखा जायेगा, तो उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। उनका अन्तिम समय कैसा भी क्यों न रहा हो, वह भारत के एक महान् सपूत थे और यह देश युगों-युगों तक उनको नमन करता रहेगा।

वीर हकीकत राय बलिदान दिवस

वसंत-पंचमी दे रही संदेश ये,
वीर-भूमि है हमारा देश ये
सिर कटाकर धर्म की रक्षा करें,
अन्यायी हो बलवान तो भी न डरें
तेरह बरस का हिंदू बालक था हकीकत
नाज था निज धर्म पे, करता था इज़्ज़त
मुल्ला के मकतब में वो करता था पढ़ाई
मुसलमानों से वहां हो गई लड़ाई
मुसलमानों ने बजाकर तालियां
'दुर्गा भवानी' को निकाली गालियां
बालक हकीकत चुप नहीं तब रह सका
अपमान अपने इष्ट का ना सह सका
'फातिमा बीबी' को वैसा कह दिया
हाय तौबा मच गई, ये क्या हुआ!
हमला किया काफिर ने है इस्लाम पर
गुस्ताखी है प्यारे नबी की शान पर
फिर बैठा काजी शरीयत के पन्ने खोलकर
राजसत्ता की खुमारी घोलकर
मौत का फतवा सुनाया मोमिनो ने
रहम बालक पर ना खाया जालिमों ने
फिर लगे कहने कि तू हो जा मुसलमाँ
माफ हो जाएंगे तेरे सब गुनाह
पर हकीकत था अटल निज धर्म पर
विश्वस्त था कि न्याय करता ईश्वर
आ गया जल्लाद फिर तलवार लेकर
त्राहि-त्राहि कर उठे नारी व नर
प्राण देकर धर्म की रक्षा करी
उम्र छोटी में थी कुर्बानी बड़ी

-अंकुर'आनंद', 1591/21
आदर्श नगर, रोहतक

तप और त्याग की प्रतिमूर्ति—पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज

❑ सुभाष आर्य, प्रधान वेदप्रचार मण्डल, रोहतक मो० 9466258105

जैसे धरती माता अपने गर्भ में बहुमूल्य हीरे-मोती, सोने-चाँदी इत्यादि अनेक पदार्थों का निर्माण करती है, जिनको पाकर भौतिक व्यक्ति अपने को सफल समझता है,

वैसे ही इस धरा पर दिव्य महापुरुषों का जन्म लेना इस धरती और प्राणियों के लिए विशेष महत्त्व की बात है। इन महान् विभूतियों में दूर से चमकने वाले दिव्य महात्मा हुए **पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज**, जिनका नाम सुनने से ही हृदय श्रद्धा से भर जाता है, जिसकी उपस्थिति से वातावरण पवित्र हो जाता था, जिनके दर्शनों से बुरे विचार दूर हो जाते थे, जिसके पवित्र आचरण से संन्यास का महत्त्व और बढ़ गया। पूज्य आचार्य जी वैदिक ज्ञान-विज्ञान के विद्वान् तो थे ही साथ में व्याकरण के महान् ज्ञाता भी थे। जवानी में जब धर्मरक्षार्थ घर-परिवार का त्याग किया तो फिर कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। तन-मन को साधने में साधुओं का जीवन लग जाता है, लेकिन यह अति कठिन परीक्षा तो इन्होंने भरी जवानी में सिद्ध कर दिखाई कि उनके तप-त्याग के सरल जीवन को देखने से ही प्रत्येक मनुष्य का सिर उनके चरणों की तरफ झुक जाता है।

वे व्याकरण के महान् आचार्य थे। सैकड़ों वैदिक विद्वानों को तैयार किया, जिन्होंने आगे चलकर देश-विदेश में बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त की तथा वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार का कार्य सफलतापूर्वक किया। इनमें मुख्य आचार्य ज्ञानेश्वार्य और स्वामी रामदेव जी रहे, जिन्होंने अपने कार्यों और विद्वत्ता के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की।

महान् आचार्य जी ने कभी अपनी या अपने शरीर के आराम की परवाह नहीं की। निश्चित समय पर जो जैसा भोजन मिल जाता तो ले लेते अन्यथा बगैर भोजन के आगे की दिनचर्या जारी रखते थे। आप धर्म, समाज, गऊ और राष्ट्र की सेवा और रक्षा को प्रथम महत्त्व देते थे। उनकी इच्छा थी कि भारत देश में कोई बुराई-पाखण्ड न फैले तथा यह देश सभी प्रकार के दुर्व्यसनों से मुक्त हो और सर्वत्र वैदिक आर्य सभ्यता का पवित्र वातावरण बना रहे।

उनकी सरलता और सादगी को देखकर यह अनुमान लगाना बड़ा मुश्किल था कि वे वेदों के महान् पण्डित, व्याकरण के महान् आचार्य और तप-त्याग के स्वामी होंगे, लेकिन उन्होंने अपने जीवन में यह कर दिखाया। जब उन्होंने देखा कि कुछ धूर्त व्यक्ति पाखण्डी रामपालदास और उसके साथी इस देश की आर्य सभ्यता को पाखण्ड और बुराई से नष्ट-भ्रष्ट करने का प्रयत्न कर रहे हैं तो बगैर देर लगाये वह निर्भीक संन्यासी उनके विरोध में खड़े हो गये।

धूर्त-कपटी शक्तिशाली लोगों ने समझा एक वस्त्रधारी, पैरों से नंगा संन्यासी उनका क्या कर लेगा? इतिहास गवाही दे रहा है कि अकेले सन्त के विरोध से सारी जनता जागी, सरकार को हिलाकर रख दिया और परिणाम हुआ कि पाखण्डियों को अड्डे समेत धराशायी कर दिया। जनता को जागना पड़ा और सरकार को भी भारतीय वैदिक सभ्यता के विरुद्ध प्रचार करने वाले पाखण्डी रामपालदास के खिलाफ कार्यवाही करनी पड़ी।

जब गोवंश के कष्टों को देखा तो गोमाता की रक्षार्थ संघर्ष किया। जनता और सरकार दोनों को चेताया कि अगर गऊमाता की रक्षा नहीं हुई तो कुछ नहीं बचेगा। परिणाम यह हुआ कि स्थान-स्थान पर गऊशालाएँ खुलीं और सरकारों की तरफ से भी कई कदम उठाए गए। यह सब आचार्य जी के तप और त्याग का ही प्रभाव था।

गायत्री मन्त्र उनका प्रिय मन्त्र था। प्रत्येक सभा में वे सर्वप्रथम इसका ही जाप करते और कराते थे। वे परमात्मा के अनन्य भक्त थे, आर्यसमाज के सिद्धान्तों को जीवन में उतार रखा था। वे सदा पवित्र आचरण में ही जीवन जीते थे। अपने विरोधियों का भी पूरा सम्मान करते थे तथा भला चाहते थे। इस प्रकार उनका पवित्र आचरण यह सिद्ध करता है कि वे आप्त पुरुष थे। आचार्य प्रवर ने सब ऐषणाओं को बहुत पीछे छोड़ दिया था, इसलिए कोई स्वार्थ उनको छू तक न सका। उनके जीवन को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदेशों को अपने जीवन में अपनाकर सत्य के मार्ग पर चले और वेदों के ज्ञान को फैलाने तथा वेदविरुद्ध कार्यों को दूर करने के लिए अपनी पूरी शक्ति और जीवन ही लगा

शेष पृष्ठ 15 पर....

हमें ईश्वर को जगत् में उसकी चेष्टाओं व क्रियाओं के द्वारा देखना चाहिये

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

परमात्मा ने हमें मानव शरीर और इसमें पांच ज्ञानेन्द्रियां एवं पांच कर्मेन्द्रियां दी हैं। हमारे नेत्र हमारी ज्ञानेन्द्रिय हैं, जो हमें स्थूल दृश्यों का दर्शन कराती हैं। अपने नेत्रों से हम

स्वयं को व दूसरे मनुष्यों, अन्य प्राणियों एवं पृथिवी, वृक्ष, सूर्य, चन्द्र, जल आदि पदार्थों को देखते हैं। वेद से हमें ज्ञात हुआ है कि यह संसार सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, अनादि, नित्य, अविनाशी, अजर, अमर और सृष्टिकर्ता ईश्वर ने बनाया है। ईश्वर जड़ व स्थूल पदार्थ नहीं है अपितु वह हमारी आत्मा के ही समान सूक्ष्म एवं चेतन पदार्थ है। जिस प्रकार हम अपने नेत्रों से मनुष्य आदि प्राणियों के स्थूल शरीरों को देखते हैं, परन्तु उसमें विद्यमान सूक्ष्म, रूप-रंग रहित चेतन जीवात्मा को नहीं देख पाते, उसी प्रकार से हम ईश्वर को सृष्टि में उसकी चेष्टाओं व क्रियाओं से अनुभव तो कर सकते हैं, परन्तु उसको अपनी स्थूल पदार्थों से बनी आंखों से अन्य स्थूल पदार्थों की तरह देख नहीं सकते। ईश्वर को देखना है तो हमें ईश्वर की रचनाओं को देखना चाहिये। यह सारा अपौरुषेय जगत ईश्वर का बनाया हुआ है। इस सृष्टि को देखकर इसके रचयिता का ज्ञान सभी ज्ञानी व मननशील मनुष्यों को होता है। यदि ईश्वर नाम की चेतन व सृष्टि की रचना करने वाली सत्ता संसार में न होती तो न यह जगत होता और न ही वनस्पति एवं प्राणी जगत ही होता। उस अवस्था में हमारा जन्म भी न हुआ होता और हम आत्मा के रूप में बिना शरीर के इस संसार में, जो प्रलयावस्था में होता, उसमें कहीं गहरी निद्रा वा सुप्तावस्था में पड़े होते। अतः ईश्वर का अस्तित्व इस सृष्टि एवं समस्त वनस्पति एवं प्राणी जगत को देखकर होता है। ऋषि दयानन्द ने एक यह भी सिद्धान्त दिया है कि रचना को देखकर उसके रचयिता का ज्ञान होता है। यह सिद्धान्त ज्ञान-विज्ञान से युक्त है। यदि इस सिद्धान्त को कोई ज्ञानी या वैज्ञानिक नहीं मानता तो उसे भी भ्रान्त मानना चाहिये। कोई भी रचना बिना रचयिता के नहीं होती और कोई भी रचना करने में सक्षम व्यक्ति व सत्ता बिना रचना किये नहीं रहता। उसका गुण उसको उस रचना करने योग्य काम को करने की प्रेरणा करता है।

मनुष्य एक चेतन प्राणी है। सभी चेतन प्राणियों का अस्तित्व शरीर में आत्मा के अस्तित्व के कारण होता है। आत्मा भी शरीर में तभी तक रहती है जब तक की शरीर रहने योग्य होता है। मनुष्य अपनी कर्म एवं ज्ञान की शक्ति के योग व समन्वय से अनेक पदार्थों की रचना करता है। हम भोजन करते हैं तो वह भोजन घर या होटल में कोई बनाता है तभी वह हमें प्राप्त होता है। अनेक स्थितियों में भोजन बनाने वाले लोग हमारे सामने नहीं होते परन्तु हम भोजन को खाकर कहते हैं कि भोजन स्वादिष्ट था। इसका बनाने वाला योग्य एवं अनुभवी प्रतीत होता है। हम यदि अपने परिचित किसी व्यक्ति के घर जायें तो उसके घर को देखकर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि इस भवन का बनाने वाला इंजीनियर, मिस्त्री व मजदूर योग्य व्यक्ति थे। उन्होंने यह मकान वा निवास अच्छा बनाया है। यद्यपि भवन बनाने वाले व्यक्ति हमारी आंखों के सामने नहीं होते परन्तु हम रचना का आधार रचयिता होता है, इस सिद्धान्त के आधार पर निश्चयात्मक रूप से पुष्टि करते हैं कि इस भवन को बनाने वाला अवश्य ही कोई व्यक्ति व अनेक व्यक्ति हैं।

संसार में हम अपनी आंखों से जो भी रचनायें व दृश्य देखते हैं वह या तो अपौरुषेय सत्ता से बने होते हैं या पौरुषेय सत्ताओं के द्वारा। यह समस्त सृष्टि जिसमें सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, अनेकानेक ग्रह व उपग्रह, लोक-लोकान्तर आदि हैं, तथा समस्त वनस्पति जगत, प्राणी जगत सहित अग्नि, जल, वायु, आकाश आदि, यह सभी अपौरुषेय सत्ता ईश्वर के द्वारा बने व धारण किये हुए हैं। कुछ पदार्थ व वस्तुओं को मनुष्यों ने भी बनाया है जिन्हें पौरुषेय रचना कहते हैं। मनुष्य ने भवन, सड़कें, वाहन, कम्प्यूटर, रेलगाड़ियां, वायुयान, वस्त्र, विभिन्न प्रकार के अन्य सामान आदि बनायें हैं, जिनका हम प्रयोग करते हैं। हम जानते हैं कि कोई पदार्थ बिना किसी के बनाये नहीं बनता। इस आधार पर हम यह विश्वास करते हैं कि प्रत्येक वस्तु को अवश्य किसी न किसी ने बनाया है। इस आधार पर सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि सभी अपौरुषेय पदार्थों का रचयिता परमात्मा सिद्ध होता है।

परमात्मा की चेष्टा व क्रियायें हम अपने भीतर अपनी आत्मा में भी अनुभव कर सकते हैं। मनुष्य जब वेदों का स्वाध्याय तथा परोपकार आदि उत्तम व श्रेष्ठ कार्यों को करता है तब उसकी आत्मा में उन कार्यों को करने में निर्भयता, निःशंकता, उत्साह व आनन्द आदि उत्पन्न होता है। जब मनुष्य इसके विपरीत चोरी, जारी, सामाजिक नियमों के विरुद्ध कोई कार्य करता है तब उसको उन कार्यों को करने में भय, शंका तथा लज्जा होती है। आत्मा में अच्छे कार्यों को करने में उत्साह, आनन्द एवं निःशंकता तथा चोरी, जारी आदि बुरे कामों को करने में जो भय, शंका व लज्जा का अनुभव होता है वह आत्मा में उसकी अपनी ओर से नहीं होता अपितु आत्मा में व्याप्त सर्वव्यापक परमात्मा की ओर से होता है जो एक मित्र एवं हितैषी की भांति उसे बुरे कामों को करने से रोकता तथा अच्छे व पुण्य कार्यों को करने में प्रेरित व प्रोत्साहित करता है। इसे ईश्वर का प्रत्यक्ष ज्ञान व अनुभव कहते हैं।

परमात्मा ने सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि जिन ग्रह व उपग्रहों सहित लोकलोकान्तरों को बनाया है वह सब आकाश में लटके हुए हैं तथा अपनी धुरी पर घूम रहे हैं। हमारे आकाशस्थ सूर्य के सभी ग्रह व उपग्रह अपनी धुरी सहित सूर्य की परिक्रमा करते हैं। सूर्य से इतर ग्रहों के उपग्रह अपने अपने ग्रह की परिक्रमा करने सहित सूर्य की भी परिक्रमा करते हैं। पृथिवी के सूर्य के चारों ओर घूमने से ही मौसम बदलता है। यह सभी कार्य समय बद्ध होते हैं। सूर्योदय तथा सूर्यास्त हमेशा समय पर ही होता है। सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण भी समय पर होते हैं। सभी वनस्पतियां एवं अन्न आदि भी मौसम आदि नियमों के अनुसार व्यवहार करते हैं। संसार में यह नियमबद्धता ईश्वर की देन है। जड़ पदार्थों में अपना कोई नियम नहीं होता। वह किसी चेतन सत्ता के आश्रित होते हैं। रसोई में भोजन बनाने का सभी सामान होने पर भोजन स्वयं तैयार नहीं हो जाता। इसके लिये एक कुशल पाककला निपुण व्यक्ति की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार से सृष्टि की उत्पत्ति व इसका पालन भी बिना चेतन सत्ता ईश्वर के नहीं होता। मनुष्य का ज्ञान व शक्ति इतनी अल्प है कि वह इस सृष्टि की रचना की भिन्न-भिन्न स्थितियों को भी भली प्रकार से नहीं जान सकती। परमात्मा ने कैसे इन सूर्य व अन्य ग्रह उपग्रहों को प्रकृति नामक सूक्ष्म जड़ पदार्थ से बनाया, कैसे उन सूक्ष्म कणों वा परमाणुओं को नियमों के अनुसार घनीभूत किया और उन्हें आकाश में उनके स्थान पर रखकर उनमें अपनी धुरी व अन्य ग्रहों की परिक्रमा आरम्भ करायी, यह कैसे सम्भव हुआ होगा, हम इसका ठीक से अनुमान भी नहीं कर सकते? गुरुत्वाकर्षण के नियम के अनुसार दो पदार्थों में आपस में आकर्षण का बल काम करता है। हमारा अनुमान है कि यदि ईश्वर न होता तो यह सूर्य व अन्य ग्रह कदापि अस्तित्व में नहीं आ सकते थे। बिना पूर्ण रूप से बने यह अपनी-अपनी धुरी पर कैसे घूमते और कैसे परिक्रमा करते। ऐसा न होने पर आकर्षण शक्ति के कारण यह आपस में दूर-दूर नहीं रह सकते थे। आकर्षण बल के कारण यह टकराकर नष्ट हो सकते थे। ईश्वर ने आश्चर्य से पूर्ण काम को सृष्टि के आरम्भ में किया। समुद्र की विशालता, उसकी गहराई को देखकर व इसकी उत्पत्ति पर विचार कर बुद्धि निष्क्रिय व अनिर्णय की स्थिति को प्रायः होती है। इस प्रकार ईश्वर निश्चय ही विलक्षण सिद्ध होता है।

हम यहां ऋग्वेद के मन्त्रों की कुछ प्रार्थनायें भी प्रस्तुत कर रहे हैं। ईश्वर सबको उपदेश करता है कि हे मनुष्यो! मैं ईश्वर सब के पूर्व विद्यमान था और सब जगत् का पति वा स्वामी हूं। मैं सनातन जगत का निमित्कारण और सब धनों का विजय करने वाला और दाता हूं। मुझ ही को सब जीव जैसे पिता को सन्तान पुकारते हैं वैसे पुकारें। मैं सब को सुख देनेहारे जगत् के लिये नाना प्रकार के भोजनों का विभाग पालन के लिये करता हूं। मैं परमैश्वर्यवान् सूर्य के सदृश सब जगत् का प्रकाशक हूं। कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता और न कभी मृत्यु को प्राप्त होता हूं। मैं ही जगत् रूप धन का निर्माता हूं। सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले मुझ ही को जानो। हे जीवो! ऐश्वर्य प्राप्ति के यत्न करते हुए तुम लोग विज्ञानादि धन को मुझ से मांगो और तुम लोग मेरी मित्रता से अलग मत होओ। हे मनुष्यो! मैं सत्यभाषणरूप स्तुति करनेवाले मनुष्य को सनातन् ज्ञानादि धन को देता हूं। मैं ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रकाश करनेहारा और मुझको वह वेद यथावत् कहता उस से सबके ज्ञान को मैं बढ़ाता हूं। मैं सत्पुरुष का प्रेरक यज्ञ करनेहारे को फलप्रदाता और इस विश्व में जो कुछ है उस सब कार्य का बनाने और धारण करनेवाला हूं। इसलिये तुम लोग मुझ को छोड़ किसी दूसरे को मेरे स्थान में मत पूजो, मत मानो और मत जानो।

शेष पृष्ठ 15 पर....

हकीकतराय की धर्मरक्षा

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

सन् 1719 को स्यालकोट, लाहौर में जन्म लेने वाले एक बालक ने 1734 में मात्र 14-15 वर्ष की आयु में

धर्मरक्षा के लिये प्राण देकर अहिंसा, धैर्य, क्षमा, चद्चरित्र, तन-मन-धन की शुद्धि,परोपकार जैसे कल्याणकारी सिद्धान्तों पर आधारित मनुष्य समाज के निर्माण के पथ की रक्षा की। 'वसन्त पंचमी' के पर्व पर इस वीर बालक ने अपने प्राण देकर चिन्तकों को पीड़ा से भरा यह चिन्तन करने के लिए प्रेरित किया कि धर्म के नाम पर बलिदान देने वाला ही बड़ा होता है, सच्चा होता है और धर्म के नाम पर हत्या करने वाला सदा क्रूर, मायावी, झूठा होता है। इस आधार पर देखा जाये तो इस्लाम का इतिहास हत्याओं पर टिका हुआ है। इन निर्मम हत्याओं में बालकों के साथ-साथ महिलाओं की हत्या व बलात्कार का भी दिल हिला देने वाला इतिहास है। इस पर भी महा आडम्बरी धर्मभीरू बुद्धिजीवी ऐसे भी हैं, जो सभी धर्म समान होने का नारा देते हैं। जब इस्लाम के नाम पर बेकसूरों का रक्त बहाया जाता है तो ऐसे लोग कहते हैं कि यह सच्चा इस्लाम नहीं है? वाह रे! इस्लाम के व्याख्याकारो। क्या औरंगजेब को पता नहीं था कि सच्चा इस्लाम क्या है? क्या इस्लामिक स्टेट का नारा देने वाले इस्लाम नहीं जानते? इस्लाम के नाम पर अलग बना पाकिस्तान जो निरन्तर आतंकवाद परोसकर बेकसूरों की हत्या करवा रहा है, क्या वह इस्लाम नहीं जानता?

19 जनवरी को कश्मीरी पण्डितों पर जो भयंकर अत्याचार हुए, उनका नरसंहार व कश्मीर से महापलायन हुआ, उस दर्दनाक घटना के तीस वर्ष पूरे हुए। क्या इन तथाकथित उदारवादियों को इस्लाम की सही व्याख्या नहीं मिलती? क्या यह सब इस्लाम की 'वाजिबुलकत्ल' की शिक्षा का पालन नहीं था? इस्लाम के उन्माद के प्रति आत्मरक्षा की प्रतिक्रिया इन बुद्धिजीवियों को 'धार्मिक असहिष्णुता' दिखाई देती है। अपने धर्म, दर्शन के कारण भारत विश्वगुरु कहलाया, क्या हम यह कहना छोड़ दें? भारतीय जीवन मूल्य विश्व को सुख-शान्ति का संदेश देते थे, क्या हम उन्हें अपने ही देश में सर्वोच्च स्थान न दें? इन्हीं जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए बालक हकीकत ने अपने प्राण दे दिए। इस संदर्भ में वीर हकीकत के भावों को आर्य उपदेशक श्री यशवन्तसिंह वर्मा ने इस प्रकार व्यक्त किया है-

पाठ गीता का भला जिसने कर लिया,
किस तरह वह तलावत (पाठ) कुरानी करे।
वेद उपनिषद् के ज्ञान को छोड़कर,
याद क्योंकर वह किस्से कहानी करे॥

छद्मरूप में स्वार्थ के लिए अपनाया गया उदारवाद सदा ही जाति एकता के लिए घातक होता है। अभी मायावती जी ने CAA को राष्ट्र की अखण्डता के लिए हानिकर बताया। मायावती जी ने पूछते हैं कि '**तिलक, तराजू और तलवार, इनको मारे जूते चार**', यह नारा कहाँ से आया था? एक वर्ग विशेष में मनु महाराज के प्रति विष भरने का काम कहाँ से हुआ? किस शिक्षा के आधार पर हमारे राष्ट्र का एक वर्ग विशेष अपने को इस देश के मूल निवासी व दूसरे अपने ही भाइयों को बाहर से आया मानने लगा? क्या इस सबसे राष्ट्र की अखण्डता बनी रहती है?

जब किसी विश्वविद्यालय में अफजल गुरु के समर्थन में नारे लगते हैं, भारत के टुकड़े करने की बात की जाती है तो न मिस्टर राहुल ही कुछ बोलते हैं और न ही मैडम सोनिया, दूसरी ओर यहीं पर CAA के विरोध को दोनों खूब हवा देते हैं। राष्ट्र ऐसे आत्मघाती प्रहारों को कैसे सहन करेगा? कश्मीरी पण्डितों के नरसंहार के बारे में ये कभी मुँह क्यों नहीं खोलते? मैडम सोनिया जी! अब समय आ गया है कि ऋषि-मुनियों की सन्तानों ने अपनी ही मातृभूमि पर अपनों की भूल के कारण मतान्ध उन्मादियों के हाथों जो अमानवीय पीड़ा सहन की हैं, उनकी वर्तमान पीढ़ी को न्याय मिले और अपनों की भूलों का हम प्रायश्चित्त करें। ये दोनों कार्य कश्मीरी पण्डितों को सम्मान, समृद्धि व सुरक्षापूर्वक कश्मीर में बसाना व पाकिस्तान से आए अपने शरणार्थी भाइयों के रोजगार, आवास व उनके बालकों की शिक्षा व्यवस्था करना। नेहरू के समय की भूल इस समय न हो पाए। नेहरू-लियाकत समझौते के समय नेहरू जी ने समझौते का फल यह बताया कि हजारों शरणार्थी अपने घरों को लौट गए हैं। उस समय इसी बात को जानने आर्य सांसद श्री प्रकाशवीर शास्त्री व स्वामी अभेदानन्द जी डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी से मिलने गए। उस समय आँखों में आँसू भरकर डॉ० मुखर्जी ने कहा कि ये वे हिन्दू लौट गए हैं जो

भूखे मर रहे थे। कलकत्ता के फुटपाथों पर भूखे मरते उन लोगों ने सोचा कि जब मरना ही है तो पूर्वजों के घर जाकर मरें। डॉ० मुखर्जी ने कहा कि हमने इन्हें अपने घर नहीं भेजा, अपितु इस्लाम की भट्ठी में झोंक दिया है। यह कहकर डॉ० मुखर्जी रुमाल से आँसू पूछने लगे और शास्त्री जी व स्वामी जी की आँखें भी डबडबा गईं।

अब तो पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर इतने अत्याचार बढ़ गए हैं कि शरणार्थी किसी हाल में जाने को तैयार नहीं हुए। अभी हम दिल्ली में उनके मध्य में 'यज्ञ' करके उनकी दयनीय दशा देखकर आए। कुछ मदद भी की। वे किसी तरह हरिद्वार दर्शन के बहाने बीजा लगवाकर अपनी इज्जत, धर्म व जान बचाकर वहाँ से निकले। इस्लाम के नाम पर बसा पाकिस्तान भला अल्पसंख्यकों को क्यों बर्दाश्त करेगा? कभी पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री मुहम्मद अली ने कहा था, ''नेहरू जी का यह कहना भारत और पाकिस्तान की एक संस्कृति है। यह भ्रम पर आधारित है। पृथक् संस्कृति के कारण ही पाकिस्तान बना है।''

अरविंद केजरीवाल कहते हैं कि CAA से शरणार्थियों को नागरिकता मिलने से बेरोजगारी बढ़ेगी। क्या अनेक बच्चे पैदा करने से बेरोजगारी नहीं बढ़ती? वाह रे, भारत के भाग्य विधाता केजरीवाल! काश, आपके अन्दर डॉ० मुखर्जी जैसा जज्बा होता तो इनके हिस्से की जमीन पाकिस्तान से लेने की बात करते। तुम्हारे जैसे नेताओं के बयान यदि अन्तर्विरोध उत्पन्न न करें तो POK भी शीघ्र हमारा हो जाए। धर्म की महत्ता देश के नेता अवश्य समझें। जो धर्म विश्व को सही दशा व दिशा में ले जा सकता है, उसी धर्म की रक्षा के लिए वीर बालक ने बलिदान दिया। शरीर के सुन्दर, कोमल लेकिन मन के दृढ़ उस बालक ने अपनी माँ के कहने पर भी धर्म त्याग नहीं किया। लाहौर के नाज़िम ने अपनी पुत्री से विवाह का लालच दिया, बालक ने ठुकरा दिया। सात्त्विक बालक को देखकर जल्लाद की तलवार हाथ से छूट गई। भारत माँ के शेर बालक ने अपने हाथों से तलवार उठाकर जल्लाद को दी। काजी के फतवे से वीर की गर्दन काट दी गई। फतवे ने इस्लाम के इतिहास में निर्दोष, पवित्र बालक की हत्या का अमिट काला अध्याय लिख दिया। हे वीर हुतात्मा बालक! तेरा बलिदान देश के नेताओं में धर्म का मर्म भर दे। तेरा बलिदान इन्हें स्मरण करा दे कि शिवा, राणा, गुरु गोविन्दसिंह, गोकुला का संघर्ष किसलिए था?

महापर्व गणतन्त्र का सन्देश

हमें जगाने आ गया, महापर्व गणतन्त्र।
सुख पाओगे सीख लो, देशभक्ति का मंत्र।
देशभक्ति का मंत्र, साथियो है सुखदाता।
देशभक्त बलवान, मान जग में है पाता।
देभक्ति के बिना व्यर्थ है मानव जीवन।
जैसे जल बिन ताल, फूल बिन जैसे उपवन।
भला इसी में देशभक्त, बन जाओ प्यारो।
बिगड़ गया है हाल देश का, इसे सुधारो॥ 1॥

प्यारे युवको-युवतियो! करो उन्हें भी याद।
जो इस प्यारे देश को, करा गये आजाद।
करा गए आजाद धन्य थे, वे नरबंका।
आजादी का बजा गए जो निर्भय डंका।
देश-धर्म की भेंट चढ़ाई भरी जवानी।
नहीं मौत से डरे, निराले थे बलिदानी।
भारत वीर सपूत, वही लाए आजादी।
धूर्त्त स्वार्थी लोग, रहे हैं कर बर्बादी॥ 2॥

जाति-पाति का देश में, है अब भारी जोर।
गुण की कीमत है नहीं, पक्षपात घनघोर।
पक्षपात हैं घोर, स्वार्थी हैं अब नेता।
कुर्सी से है प्यार, दिखाई देश न देता।
ऊँच-नीच का रोग, भयंकर बढ़ रहे हैं।
शैतानों को नीच, शीष पर चढ़ा रहे हैं।
धर्म-कर्म को भूल गए, नेता अज्ञानी।
याद इन्हें ना रही, शहीदों की कुर्बानी॥ 3॥

महापर्व गणतन्त्र यह, प्रण करो सब आज।
तुम्हें बचानी है सुनो, भारत माँ की लाज।
भारत माँ की लाज, बचाओ वीरो! जाओ।
करो परस्पर मेल, फूट पापिन को त्यागो।
उग्रवाद और आतंकवाद का रोग मिटाओ।
बिस्मिल शेखर बनो, देश की शान बढ़ाओ।
जीवन कर लो सफल, समय मत व्यर्थ गंवाओ।
'नन्दलाल' निज नाम, अमर जग में कर जाओ॥4॥

–पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

हमें ऋत सत्य के प्रति आत्मसमर्पण करना चाहिए

❑ पण्डित उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक

त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मं वदिष्यामि, ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि, तन्मामवतु तदवक्तारमवतु। अवतु माम। अवंतु वक्तारम्।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का लेखन उक्त तैत्तिरीय आरण्यक के वचन से प्रारम्भ किया है। इसका अर्थ यह है कि मैं जो बात जैसी होगी वैसी ही कहूँगा, बिल्कुल सत्य कहूँगा, परन्तु फिर भी ईश्वर मेरी रक्षा करे। जो बात जैसी है वैसे ही कोई कहेगा तो स्वयं सत्य उसकी रक्षा करेगा फिर ईश्वर को बीच में लाने की क्या आवश्यकता है। इससे गूढ़ रहस्य छिपा है? असत्य बोलने वाला कहे भगवान मेरी रक्षा करो समझ आता है, किन्तु सत्य बोलने वाला क्यों कहे।

मानव जो देखता सुनता है वह उसके ज्ञानर्जन के आधार पर निर्णय करता है वह उसके लिये तो सत्य हो सकता है, किन्तु क्या ईश्वरीय विधान में भी वह सत्य है मनुष्य अपने संसारिक ज्ञान को केन्द्रीत होकर कहेगा। किन्तु सत्य की परख विशाल सृष्टि के दृष्टिकोण से ही हो सकेगी।

इसलिए श्रुति ने कहा कि मैं अपने से सत्य कहता हूँ और यथार्थ कहता हूँ, किन्तु ईश्वर की दृष्टि में असत्य हो सकता है। ऐसी परिस्थिति में मैं अपने को ईश्वर के प्रति समर्पण करता हूँ, क्योंकि मेरी दृष्टि मुझसे ही बंधी है और उसकी दृष्टि सबसे बंधी है।

ऋत सत्य और सत्य का रहस्य-ईष्वर ऋत सत्य है और भूत-भविष्य-वर्तमान का व्यवहार ऋत सत्य में नहीं होता और वह काल की चपेट में नहीं आता है। अत: सत्य शब्द मनुष्यों में ही सम्बन्ध रखता है, ईश्वर में नहीं और सत्य सदैव ऋत सत्य के अपेक्षा असत्य ही होता है। संसार के सारे व्यवहार सत्य के आधार पर अवश्य होता है। परन्तु ईश्वर रूपी ऋत सत्य में संयोग व वियोग नहीं होता है। सदैव संयोग ही संयोग रहता है। अत: वास्तविक सत्य तो ऋत सत्य है। असत्य के आश्रित असुर, सत्य के आश्रित मनुष्य और ऋत सत्य के आश्रित देवता रहते हैं।

आत्मसमर्पण के लिये तीव्र इच्छा शक्ति व समर्पण के प्रकार-सर्वप्रथम सत्य की बांह पकड़ने के लिये तीव्र इच्छा शक्ति व पुरुषार्थ का होना अनिवार्य है, किन्तु यदि बुरा आदमी बुरे काम के फल से बचने की ईश्वर से प्रार्थना करे, तो ठीक है- किन्तु यहाँ तो कहा गया है कि भले ही मैंने सत्कर्म किया हो, किन्तु हो सकता है ईश्वर की दृष्टि में वो असत्य हो, तभी प्रार्थना की गयी कि मैं कर्म करके आपकी शरण में आता हूँ, आपके चरणों में अपने को समर्पित करता हूँ। क्योंकि मैं कर्म करने में स्वतन्त्र हूँ और फल भोगने में परतंत्र के लिये आपके आधीन हूँ।

आइए आत्मसमर्पण के प्रकारों पर विचार करें।

1. मनुष्य के अन्दर ऋत सत्य की ओर चलने की तीव्र इच्छा शक्ति होनी अनिवार्य है।
2. उससे भी बड़ी इच्छाशक्ति ईश्वरीय वाणी वैदिक धर्म, संस्कार, संस्कृति, सभ्यता को अपनाना है।
3. उससे भी बड़ी इच्छाशक्ति, नियमित सन्ध्या, यज्ञ आर्षग्रन्थों का स्वध्याय व आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में सपरिवार जाना है।
4. उससे भी बड़ी इच्छाशक्ति, चाहे वह सदस्य हो, पदाधिकारी हो या प्रचारक हो उसको समर्पित भाव व नि:स्वार्थ भाव से अपने मिशन की सेवा करना है।
5. उससे भी बड़ी इच्छाशक्ति यह है-सत्य के प्रचार के लिये जिन महापुरुषों ने अपना जीवन बलिदान किये हैं, उनके जीवन चरित्र को पढ़कर प्रेरणा लेना है और उनके सर्जन कार्य को आगे बढ़ाना है।
6. उससे भी बड़ी इच्छाशक्ति है कि ईश्वरीय वाणी वैदिक धर्म के लिए सत्संग भवन व यज्ञशाला का निर्माण कराना है।
7. उससे भी बड़ी इच्छाशक्ति है कि वैदिक धर्म के लिए चार दीवारों से बाहर निकलकर स्थान-स्थान पर धर्मज्ञान जनता को देना है।
8. और सबसे बड़ी इच्छाशक्ति व आत्मसमर्पण वह है कि ईश्वर के प्रति पूर्ण आत्म समर्पण करके ऋत

सत्य के लिये अपने प्राणों तक को भी बलिदान करना है।

यदि उक्त आत्म समर्पण की क्रियात्मक भावनाएं हमारे जीवन में आ जाए तो हमारा जीवन सफल हो जायेगा। सम्पूर्ण संसार के मनुष्य सत्य की ओर टकटकी लगायें है, किन्तु अपने-अपने मतों के पूर्वाग्रहों से अशक्त हो रहे हैं। केवल आर्यसमाज ही सम्पूर्ण मानव को ऋत सत्य की ओर ले जा सकता है।

प्रभु के प्रति आत्मसमर्पण करने वाला निश्चिन्त हो जाता है-आत्मसमर्पण जीवन का नियम व सिद्धान्त है। हर व्यक्ति एक दूसरे की अपेक्षा छोटा है, एक दूसरे का सहारा लेना पड़ता है। इसलिए अपने पुरुषार्थ से कर्म करते रहें और सत्य की डोर को न छोड़ें। पुन: अपना सारा बोझ ईश्वर के ऊपर छोड़ने से ईश्वर सारा बोझ ले लेते हैं। कवि ने ठीक कहा है-

जब दांत न थे दूध दियो, जब दूध दियो तब अन्न न देहैं। जल में थल में पशु पक्षिन्न की जो सुध लेत सो तो कोहू लैहैं॥

आत्मसमर्पण का केवल एक ही उपाय है कि कुछ भी हम करें, उसको समर्पित होकर करें और अपने को बीच में से निकाल देवें। तब सारा कार्य करते हुए भी चिन्ता बीच से निकल जायेगी। प्रत्येक अन्धविश्वास, अन्धबद्धा ऋत सत्य से दूर ले जाती है।

आत्मसमर्पण केवल आस्तिक ही कर सकता है-ऋत-सत्य पथगामी, सत्यवादी, पुरुषार्थी व्यक्ति के आत्मा में सदैव उत्साह बना रहता है और उसकी इच्छा मजबूत रहती है, उसका ईश्वर पर अटूट विश्वास होता है और वह प्रत्येक कृत्य को ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण करके करता है। जिन महापुरुषों ने सत्य मार्ग पर चलकर संसार को सत्य राह दिखाई है उनका प्रत्येक कृत्य ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण था।

मैं को मिटा देना ही आत्मसमर्पण है।

जब तक मानव के अन्दर ''अहंकार'' मैं हूँ का भाव बना रहता है और प्रत्येक सफलता का श्रेय अपने को देता है और संसार को अपना है समझता रहता है, तब तक ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण की भावना का उदय नहीं होगी। प्रत्येक अणु व प्रत्येक पानी की बूंद जब सोचते हैं कि हम भी कुछ हैं तब उनका मूल्य कुछ नहीं है जब अणु अपने को विषाल पृथ्वी का हिस्सा बनाता है और पानी की बूँद समुद्र में जा डूबती है, तभी वह विशाल पृथ्वी व समुद्र को हिस्सा बन जाते हैं। इसी प्रकार दिये की लौ जब तक दिये के साथ बनी रहती है तो वह छोटी-सी बत्ती का प्रकाश कहलाती है किन्तु जब-वह सूर्य से मिल जाती है तो अखिल ब्रह्माण्ड को प्रकाश देने लगती है। इसी प्रकार आत्मा जब परमात्मा के प्रति अपने को समर्पित कर देता है जब कह उठता है, हे ईश्वर यह मेरी इच्छा नहीं तेरी इच्छा हैं। तब वह आत्मा ईश्वर के प्रेम में उसी की गोद में जा पहुंचता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ऋत सत्य और सत्य का अर्थ संसार को बताया और आर्यसमाज की स्थापना करके सदैव के लिये ऋत ज्ञान ज्योति जला गये।

संम्पर्क-गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
मो० 9411512019, 9557641800

योग-ध्यान, साधना शिविर

जम्मू काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) ऊधमपुर, जम्मू काश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य मां सत्यप्रियायतिजी के सान्निध्य में दिनांक 26 अप्रैल से 3 मई-2020 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाएगा। इस अवसर पर पूज्य चैतन्यस्वामी जी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भान्ति सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। उपनिषद् एवं योग-दर्शन पर मुख्यत: चर्चाएं होंगी तथा शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य स्वामीजी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं, इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं० 09419107788 व 07006647800 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

-भारतभूषण आनन्द, प्रधान, आश्रम ट्रस्ट।

तप और त्याग की प्रतिमूर्ति....पृष्ठ 8 का शेष....

दिया। मुझे लगाता है कि महान् आचार्य अपने को ऋषि ऋणि से मुक्त कर गए। मैं उन सौभाग्यशाली व्यक्तियों में रहा जिन पर पूज्य आचार्यश्री की कृपा हुई और आशीर्वाद प्राप्त हुआ। मई 2013 का वह दिन महत्त्वपूर्ण बन गया जिस दिन पूज्य आचार्य जी के पवित्र चरण मेरे घर में पड़े और घर को पवित्र कर दिया। उस देवतुल्य संन्यासी ने मुझसे मुझे ही मांगकर आर्यसमाज और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार से जोड़ दिया और कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा पहुँचो। उस दिन से और आज तक अगर कोई मेरे लायक कार्य होता है तो मैं पूज्य आचार्य जी का आशीर्वाद समझकर करता हूँ।

धन्य है, वह भूमि, वह देश और उसके वासी जहाँ आचार्य बलदेव जी महाराज जैसे जितेन्द्रिय, तपस्वी, विद्वान्, आर्य सभ्यता का रक्षक, ईश्वरभक्त, समाज-सुधारक व सच्चे संन्यासी ने जन्म लिया और अपने जीवन को उपकार रूपी यज्ञ में आहुत कर दिया। ऐसे महात्मा के बारे में लिखना सरल नहीं है और न ही मुझ में इतनी योग्यता है। वह तो अनन्त ज्ञान, दया, क्षमा और करुणा के स्वामी थे। उनके महान् उपकारों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनकी पुण्यतिथि 28 जनवरी पर उस दिव्य आत्मा को कोटिशः प्रणाम।

आश्रम उत्सव सम्पन्न

प्रतिवर्ष की भान्ति वैदिक योगाश्रम भऊ रोहतक में मकरसंक्रान्ति पर्व आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री जगदेव विद्यालंकार, श्री सत्यपाल 'मधुर' के वेदोपदेश हुए। आचार्य वेदमित्र जी ने विद्वानों, खिलाड़ियों व छात्राओं को सम्मानित किया। आश्रम में अनेक युवा शिक्षा शास्त्री व छात्रों ने सब उत्तम व्यवस्था की थी।

आचार्य वेदमित्र जी युवाओं को सम्मानित करते हुए।

हमें ईश्वर को जगत् में...पृष्ठ 10 का शेष....

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। वह एकमात्र ईश्वर सब वेद भक्तों एवं सत्कर्म करने वालों का प्रेरक एवं फल प्रदाता है। वह सुख, आनन्दयुक्त एवं कल्याणप्रद है। दुष्टों, मिथ्याचारियों व अधमपुरुषों को दण्ड देने व रुलाने वाला है। वह संसार के सब पदार्थों में ओतप्रोत है। हमारी आत्मा के भीतर व बाहर विद्यमान है। वह हमारे सब विचारों व कर्मों का साक्षी है और उनका फल प्रदाता, सज्जनों को सुख देने सहित अशुभ कर्मों को करने वालों को दण्ड प्रदाता भी है। हमें उसकी व्यवस्था व नियमों से डर कभी कोई अपकर्म या पाप नहीं करना चाहिये। हम वेदाध्ययन, वेदानुकरण एवं वेदाचरण कर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनायें। देश व समाज हित के कार्यों में सदैव तत्पर रहे। न भ्रष्टाचार करें और न भ्रष्टाचार करने वालों को किसी प्रकार की सहायता व सहयोग प्रदान करें। वैदिक धर्म सहित सभी धर्मों से भी बढ़कर देश है। देश एवं धर्म दोनों परस्पर पूरक हैं। हमें दोनों के लिये ही बलिदान होने की भावना रखनी चाहिये। ईश्वर को हमें उसकी रचनाओं सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, अन्न, जल, वायु, फल-फूल आदि में उसकी क्रियाओं व नियमों को अनुभव कर उसका साक्षात्कार करना चाहिये।

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

—रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, मो० 7206865945

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. आर्य कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जिला करनाल 7,8,9 फर० 20
2. आर्यसमाज कोसली जिला रेवाड़ी 29 फर० से 1 मार्च 20

—सभामन्त्री

वैदिक यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह

झज्जर, 13.1.2020। वैदिक यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह का आयोजन महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, मोहल्ला भट्ठी गेट, झज्जर में हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा रिटायर्ड लाईंग ऑफिसर महावीर सिंह आर्य तथा मुख्यवक्ता रिटायर्ड कॉलेज प्राचार्य डॉ. एच.एस. यादव रहे। मुख्य यज्ञमान श्रीमती मामकौर एवं महाशय रतिराम आर्य रहे। यज्ञ समिति झज्जर के लगभग 40 होनहार विद्यार्थियों को वस्त्रों से सम्मानित किया गया।

श्री महावीर सिंह आर्य ने घर में सुख-शान्ति के लिए पांच महायज्ञों का पालन करने की बात कही। निराकार ईश्वर की उपासना करना ब्रह्मयज्ञ है। पर्यावरण की शुद्धि के लिये हवन करना देवयज्ञ है। जीवित माता-पिता, बुजुर्गों का सम्मान व सेवा करना पितृयज्ञ है। पशु-पक्षी, विकलांग, अनाथ, विधवा आदि की मदद करना बलिवैश्वदेवयज्ञ है। सदाचारी विद्वान् द्वारा दिये गये उपदेश को ग्रहण करना अतिथियज्ञ है। डॉ. एच.एस. यादव ने कहा कि माता-पिता की असली सम्पदा संतान होती है। बच्चों को अच्छे संस्कार देकर ही उनके भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं। माता-पिता अपने आचरण से संतानों के अन्दर अच्छे संस्कार आसानी से डाल सकते हैं। रिटायर्ड प्राध्यापक द्वारकादास ने आर्यों के अन्दर कथनी व करणी में एकरूपता की बात कही तथा लाला प्रकाशवीर आर्य ने आर्य समाज के सत्संगों में बढ़-चढ़कर भाग लेने की बात कही। पंडित जयभगवान आर्य, श्री भगवान सिंह, दिलीप आर्य तथा मास्टर पनसिंह ने महर्षि दयानन्द संबंधी भजन तो अध्यापिका सुमित्रा ने ईश्वर भक्ति का भजन सुनाया। बालक अनमोल ने विद्यार्थी की सफलता में मन की एकाग्रता को रेखांकित किया। मंच का संचालन श्री मुकेश आर्य ने किया। श्री जयप्रकाश राठी, ओमप्रकाश यादव, कृष्ण शास्त्री, उद्यम सिंह, कान्ता, सुरेश, सेवा, सोनिया, पुष्पा आदि गणमान्य महिला-पुरुष उपस्थिति रहे। सुभाष आर्य ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। **—सुभाष आर्य, 9813356991**

भजन (तर्ज-मन डोले....)

प्राणायाम करो व्यायाम करो, सब भारत के नर-नार।
हो जाये दूर दुःखों का भार॥ टेक

1. महर्षि श्री पतंजलि जी ने योगशास्त्र को किया तैयार।
मेधा बुद्धि के द्वारा फिर मन के हो जाएं शुद्ध विचार।
शुद्ध ज्ञान कर्म भक्ति से उपासना का मिलता सार।
मिले शुद्ध हवा ना चाहिये दवा कोई आए नहीं विचार।
भस्त्रिका दम भरने से फिर दमा-अस्थमा मिट जाए॥

2. एलर्जी हो चर्मरोग कहीं खुजली-खाज न टिक पाए।
5-5 सैकेंड खींचे-छोड़े अन्दर और बाहर आए।
दिन-प्रतिदिन करने से इस तन अन्दर चुस्ती छाए।
खिल उठे काया फिर तेरी जीवन में हरियाली आए।
कर कपालभाति मिटजा ब्याधि ना होवे कोई बीमार॥

3. अनुलोम विलोम उज्जायी कर वाय त्रिबंध लिए लगा।
भ्रामरी द्वारा बुझी हुई तू मन की शक्ति लिए जगा।
उच्च स्वर से ओ३म् नाम की उद्‌गीथ गाथा लेना गा।
आसन और संयम के द्वारा सब कमजोरी दूर भगा।
हो यत्न इसा प्रयत्न इसा करो सन्ध्या-हवन दो बार॥

4. प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्त में शुद्ध ऑक्सीजन मिल जाए।
यम-नियम के करने से हो सभी समस्या हल जाए।
आसन प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि खिल जाए।
हृदय अंदर देख जरा फिर खिल वो फूल कमल जाए।
कह रामेश्वर वो परमेश्वर खुद कर दे बेड़ा पार॥

—पं० रामेश्वर आर्य, भजनोपदेशक, प्रधान
आर्यसमाज उचाना मण्डी (जीन्द) 9416955090

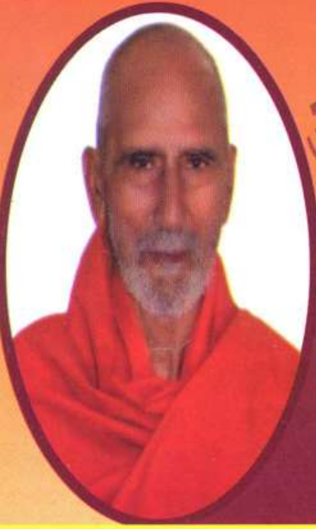

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

के तत्त्वावधान में आचार्य बलदेव स्मृति दिवस पर आयोजित

स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

स्थान - दयानन्द मठ रोहतक | समय - प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक

दिनांक - 02 फरवरी 2020 (रविवार)

आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :- आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ रोहतक

8901387993, 9416874035, 9911197073, 9416503513, 9813235339

श्री ....

पता ....

....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा